

न्यायालय राजस्व मण्डल, मध्यप्रदेश, ग्वालियर

समक्ष : अशोक शिवहरे  
सदस्य

निगरानी प्र० क्र० 4190-दो/2012 विरुद्ध आदेश दिनांक 26-10-12  
पारित नायब तहसीलदार, राजनगर प्रभारी क्षेत्र ललपुर, जिला छतरपुर प्रकरण  
क्रमांक 04/अ-12/2011-12.

1- खरेलात पिता दुर्जना प्रजापति  
2 - भुविन्दी पिता दुर्जना प्रजापति  
दोनों निवासी ग्राम बिला, तह० राजनगर,  
जिला छतरपुर, म०प्र०

--- आवेदकगण

विरुद्ध

कलुवा तनय पंचा काछी,  
निवासी ग्राम बिला, तह० राजनगर,  
जिला छतरपुर, म०प्र०

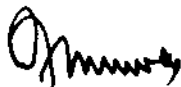
--- अनावेदक

श्री सुरेश रजक, अभिभाषक - आवेदकगण  
श्री कुंवर सिंह कुशवाह, अभिभाषक- अनावेदक

आदेश

(आज दिनांक 29.5. 2014 को पारित)

यह निगरानी का आवेदनपत्र मध्यप्रदेश भू-राजस्व संहिता, 1959  
(जिसे आगे केवल संहिता कहा जायेगा) की धारा 50 के अन्तर्गत नायब  
तहसीलदार, राजनगर प्रभारी क्षेत्र ललपुर, जिला छतरपुर के प्रकरण क्रमांक



04/अ-12/2011-12 पारित आदेश दिनांक 26-10-12 से असन्तुष्ट होकर प्रस्तुत किया गया है।

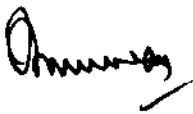
2/ प्रकरण के तथ्य इस प्रकार हैं कि अनावेदक कलुवा ने अपने भूमिस्वामी स्वत्व की भूमि खसरा नं0 805/2, 805/3, 805/4, 805/5, 806, 828 एवं 829 कुल रकबा 8.539 हे. के सीमांकन हेतु आवेदनपत्र तहसील न्यायालय में प्रस्तुत किया। राजस्व निरीक्षक द्वारा 26-02-12 को सीमांकन कर प्रतिवेदन नक्शा पंजीनामा एवं फील्ड बुक के साथ तहसील न्यायालय में प्रस्तुत किया। तहसील न्यायालय में दिनांक 29-2-12 को आवेदक की ओर से इस आशय का आपत्ति प्रस्तुत की गयी कि ख0नं0 805 के पट्टांक का सीमांकन करते समय राजस्व निरीक्षक द्वारा आपत्तिकर्ता के भूमिस्वामी स्वत्व की भूमि की नाप करा ली है, जबकि आपत्तिकर्ता की भूमि ख0नं0 817, 818 एवं 824/2/3 के बीच शासकीय नाला है व आपत्तिकर्ता द्वारा अपने भूमिस्वामी स्वत्व की भूमि का सीमांकन कराया गया जो दिनांक 13-11-2000 को स्वीकृत किया गया है तथा सीमा-चिन्ह बनाये गये थे तब से आपत्तिकर्ता अपनी भूमि पर काबिज है। इस आपत्ति का जबाव अनावेदक कलुवा द्वारा प्रस्तुत किया गया जिसमें आपत्तिकर्ता परिवेदित पक्षकार नहीं होने तथा ना ही आपत्तिकर्ता की भूमि की नाप की जाना दर्शाया गया। आपत्तिकर्ता बारेलाल द्वारा आपत्ति के संबंध में लिखित एवं मौखिक साक्ष्य प्रस्तुत करने का अवसर देने का अनुरोध अपने पत्र दिनांक 16-7-12 द्वारा किया गया। उभय पक्ष को सुनने के पश्चात नायब तहसीलदार ने अपने आदेश दिनांक 26-10-12 में यह निष्कर्ष निकाला है कि सीमांकन सरहदी काश्तकारों को सूचना देकर किया गया है। आपत्तिकर्ता बारेलाल की भूमि की कोई भी नाप नहीं की गयी है, ना ही आपत्तिकर्ता का नाम अवैध कब्जा में लेख है। अतः नायब तहसीलदार द्वारा आपत्ति निरस्त कर सीमांकन स्वीकार किया गया।



इस आदेश के विरुद्ध आवेदक द्वारा यह निगरानी राजस्व मण्डल में प्रस्तुत की गयी है।

3/ मैंने अधीनस्थ न्यायालय के अभिलेख का अवलोकन किया। आवेदकगण के अभिभाषक का तर्क है कि राजस्व निरीक्षक ने मौके पर स्थित नाला को पारकर खसरा नं. 708 की भूमि मानते हुए आवेदक के भूमिस्वामी स्वत्व की भूमि पर सीमाबिन्दु लगा दिये हैं। सीमांकन के पूर्व आवेदकगण को सूचना नहीं दी गयी और आवेदकगण के पीठ-पीछे सीमांकन की कार्यवाही की गयी है। उनका यह भी तर्क है कि अनावेदक द्वारा आवेदकगण के विरुद्ध कब्जा वापिसी हेतु आवेदन तहसील न्यायालय में प्रस्तुत किया है जो तहसील न्यायालय ने प्रकरण क0 01/अ-70/12-13 दर्ज कर आवेदकगण को सूचनापत्र जारी किया गया है, जबकि सीमांकन में आवेदकगण का अनावेदक की भूमि पर अवैध कब्जे का कोई उल्लेख नहीं है। अतः उन्होंने निगरानी स्वीकार करने का अनुरोध किया।

4/ अनावेदक के अभिभाषक ने लिखित तर्कों में मुख्य मुद्दा यह प्रस्तुत किया है कि राजस्व निरीक्षक द्वारा अनावेदक के भूमिस्वामी स्वत्व की आराजी का सीमांकन किया गया है। सीमांकन के दौरान खसरा नं0 805/2, 805/3, 805/4 कुल रकबा 4.415 हे. पर दौलता हरिचरण तनय जुगला कुम्हार का अवैध कब्जा पाया गया। सीमांकन पूर्णतः सरहदी काश्तकारों को सूचना देकर उनकी उपस्थिति में किया गया है। आपत्तिकर्त्ता/आवेदकगण कतई परिवेदित पक्षकार नहीं है और ना ही आपत्तिकर्त्ता की भूमि का नाप की गयी है। आपत्तिकर्त्ता/आवेदकगण की आपत्ति पर वैधानिक प्रक्रिया का पालन कर नायब तहसीलदार द्वारा आदेश पारित किया गया है। अतः उन्होंने निगरानी खारिज करने का अनुरोध किया।

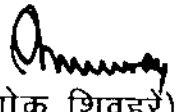


5/ तहसील न्यायालय में प्रस्तुत आवेदनपत्र में कलुवा द्वारा अनावेदक क0-4 पर बारेलाल पिता दुर्जना का नाम अंकित किया है। तहसील न्यायालय के अभिलेख पृष्ठ 18 पर उपलब्ध सूचनापत्र की फोटो प्रति में क्रमांक 1 पर दुर्जना पिता भैरमा कुम्हार एवं अन्य 12 नाम अंकित है जिसमें दिनांक 6-6-11 को प्रातः 10 बजे कलुवा की प्रश्नाधीन भूमि कुल किता 7 कुल रकबा 8.539 हे. का सीमांकन किये जाने का उल्लेख है, किन्तु इस सूचनापत्र पर किसी भी कृषक के सूचना प्राप्ति के हस्ताक्षर नहीं है। तहसील न्यायालय के अभिलेख पृष्ठ 31 पर उपलब्ध सूचनापत्र में ख0नं0 805/2, 305/3, 805/5, 828 एवं 829 का सीमांकन दिनांक 26-2-12 को किये जाने का उल्लेख है, किन्तु इसमें आवेदकगण या उनके पिता का नाम नहीं है तथा सूचनापत्र की पृष्ठ पर गोविन्ददास, लल्लू, राजेश प्रजापति एवं नन्नु कुशवाह के हस्ताक्षर हैं। इससे स्पष्ट है कि सीमांकन आवेदनपत्र में कलुवा द्वारा आवेदक बारेलाल का नाम अंकित किये जाने पर भी, सीमांकन के पूर्व आवेदक बारेलाल को सूचना नहीं दी गयी। पंचनामें में भी आवेदकगण की उपस्थिति या उनके द्वारा हस्ताक्षर नहीं करने का कोई उल्लेख नहीं है। सीमांकन प्रतिवेदन में राजस्व निरीक्षक द्वारा ख0नं0 805/2, 805/3, 805/4 कुल रकबा 5.063 हे. में से रकबा 4.415 हे. पर दौलता, हरिचरन तनय जुगला कुम्हार तथा खसरा नं0 805/5 रकबा 0.648 हे. पर पुण्यप्रताप गोकलसिंह तनय उत्तरसिंह का अवैध कब्जा होना अंकित किया है, किन्तु नायब तहसीलदार के प्रकरण क्रमांक 01/अ-70/12-13 के अभिलेख से स्पष्ट है कि अनावेदक कलुवा द्वारा आवेदक क0-1 बारेलाल तथा आवेदक क0-2 गुबंदी तनय दुर्जना के विरुद्ध भी तहसील न्यायालय के सीमांकन प्रकरण क0 4/अ-12/11-12 में पारित आदेश दिनांक 26-10-12 के आधार पर कब्जा वापसी हेतु धारा 250 का वाद प्रस्तुत किया गया है, इसलिये यह नहीं माना जा सकता कि आवेदकगण सीमांकन में परिवेदित पक्षकार नहीं है। आवेदकगण ने तहसील न्यायालय में प्रस्तुत आपत्ति में ख0नं0 805 के बटांक



का सीमांकन करते समय राजस्व निरीक्षक द्वारा आपत्तिकर्ता के भूमिस्वामी स्वत्व की भूमि की नापति कराने तथा आपत्तिकर्ता की भूमि ख०नं० 817, 818 एवं 824/2/3 के बीच शाराकीय गाला होना दर्शाया गया। तहसील न्यायालय के अभिलेख पृष्ठ 46 पर उपलब्ध नक्शाशीट के अवलोकन से आवेदकगण के कथन की प्रथमदृष्ट्या पुष्टि होती है क्योंकि नक्शे में खसरा नं० 805,806 तथा खसरा नं० 817, 826, 818 के बीच में डबल लाईन अंकित है, किन्तु नायब तहसीलदार द्वारा आदेश पारित समय इस पर विचार कर कोई निष्कर्ष नहीं निकाला गया है। आवेदकगण द्वारा अपने भूमिस्वामी स्वत्व की भूमि का सीमांकन दिनांक 13-11-2000 को कराया जाने के संबंध में तहसील न्यायालय में दस्तावेज भी प्रस्तुत किये गये हैं जिन पर नायब तहसीलदार द्वारा आदेश पारित करते समय कोई विचार नहीं किया।

6/ उपरोक्त विवेचना के आधार पर निगरानी स्वीकार की जाती है। नायब तहसीलदार का आदेश दिनांक 26-10-12 निरस्त किया जाता है। प्रकरण इस निर्देश के साथ तहसील न्यायालय को प्रत्यावर्तित किया जाता है कि उभय पक्ष एवं अन्य सभी सरहदी काश्तकारों को विधिवत सूचनापत्र तामील कर उनकी उपस्थिति में सीमांकन की कार्यवाही नियमानुसार करने के पश्चात प्रकरण का निराकरण विधि अनुसार करें। यदि प्रश्नाधीन भूमि सरहदी ग्राम बिला की सीमा से लगी है और उसका नक्शे से मिलान नहीं होता हों तो सर्वप्रथम नक्शा सुधार की कार्यवाही की जाय।

  
(अशोक शिवहरे)  
सदस्य,  
राजस्व मण्डल, म०प्र०